International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 7, July 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gage as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

''कामुकता के वर्तमान संसाधन एवं युवा वर्ग पर इसके दुष्प्रभाव के रूप में कामुक अपराध''

Dr. Vivek Mehta*

Dr. Deepak Gupta*

शोध सारांष

संसार के समस्त प्राणियों की संरचना प्रकृति पर निर्भर करती है। मनुष्य भले ही सामाजिक प्राणी हो गया किन्तु उसकी नैसर्गिक आवष्यकताएँ यथा–भूख–प्यास लगना, मल–मूत्र त्यागना, सोना–जागना आदि अपने प्राकृतिक रूप में विद्यमान हैं। इसी तरह समयानुकूल संतति वृद्धि हेतु प्रकृति ने विपरीत लिगों यथा–स्त्री–पुरुष के सहवास की व्यवस्था की है। आदिम युग हो या वैदिक युग या फिर वर्तमान का आधुनिक भौतिकवादी समाज, स्त्री–पुरुषदोनों ही अपनी सेक्स संतुष्टि हेतु प्राकृतिक, अप्राकृतिक, सामाजिक–असामाजिक, कानूनी–गैरकानूनी, योग्य–आयोग्य का ध्यान रखे बिना ही भिन्न तरीकों का प्रयोग करते आये हैं। पाप–पुण्य, धर्म–अधर्म, आचार–विचार, रीति–रिवाज, परम्पराओं, मान्यताओं, लोकाचारों, सांस्कृतिक एवं सामाजिक मूल्यों, नियम कानूनों को ताक पर रखकर मनुष्य अपनी सेक्स आपूर्ति हेतु प्रयास करता रहता है। जो कि कामुक अपराध का एक महत्वपूर्ण कारक है।

कुंजीषब्द– काम, वासना, ब्रह्मचर्य, वीर्यरक्षा, कामुक अपराध।

प्रस्तावना– मनुष्य का प्राणी होना उसके स्वभाव में परिलक्षित होता है। सामाजिक बंधन के कारण व्यक्ति का व्यवहार संतुलित होता है। एटिकेट, मेनर, उचित आदि विचार उसे सतत् सामाजिक प्राणी बनाये रखने में सहायता करते हैं। किंतु अचेतन मन में व्याप्त इच्छाएँ, कुण्ठाओं के रूप में आपूर्ति हेतु प्रयत्नषील रहती हैं। उन दमित, शमित इच्छा को फ्रायड ने मनोविष्लेष्णात्मक उपागम में समझाने का प्रयत्न किया है।[1] संसार के समस्त प्राणियों की संरचना प्रकृति पर निर्भर करती है। मनुष्य भले ही सामाजिक प्राणी हो गया किन्तु उसकी नैसर्गिक आवष्यकताएँ यथा– भूख–प्यास लगना, मल–मूत्र त्यागना, सोना–जागना आदि अपने प्राकृतिक रूप में विद्यमान हैं। इसी तरह समयानुकूल संतति वृद्धि हेतु प्रकृति ने विपरीत लिगों यथा–स्त्री

* **Dept. of Criminology & Forensic Science, Dr. H.S. Gour Central University,Sagar M.P.**

पुरुषके सहवास की व्यवस्था की है। आदिम युग हो या वैदिक युग या फिर वर्तमान का आधुनिक भौतिकवादी समाज, स्त्री–पुरुष दोनों ही अपनी सेक्स संतुष्टि हेतु प्राकृतिक–अप्राकृतिक, सामाजिक–असामाजिक, कानूनी–गैर कानूनी, योग्य–अयोग्य का ध्यान रखे बिना ही भिन्न तरीकों का प्रयोग करते आये हैं। पाप–पुण्य, धर्म–अधर्म, आचार–विचार, रीति–रिवाज, परम्पराओं, मान्यताओं, लोकाचारों, सांस्कृतिक एवं सामाजिक मूल्यों, कानूनों को ताक पर रखकर मनुष्य अपनी सेक्स की आपूर्ति हेतु प्रयास करता रहता है। भारतीय दर्षन में सांस्कृतिक लक्ष्यों और संस्थागत मानदण्डों के आधार पर पुरुषार्थ हेतु धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष बतलाये गये हैं। राजनैतिक परिस्थितियों के चलते धर्म लुप्तप्राय है और मोक्ष की अवधारणा पूर्णतः विलुप्त हो चुकी है। शेष अर्थ और काम पूर्ण आवेग के साथ मनुष्यता पर प्रभाव बनाये हुए हैं। भौतिकवादी विचार ने माननीय सुप्रीम कोर्ट को भारतीय दण्ड संहिता की धारा 377 में परिभाषित व्यवहार को जो लगभग 158 वर्षों तक अपराध था, परिवर्तित कर ''अपराध नहीं है'' की श्रेणी में लाकर खड़ा करने को मजबूर कर दिया। साथ ही भारतीय दण्ड संहिता की धारा 497 जिसमें विवाहेत्तर अन्यत्र शारीरिक संबंध जो ''व्याविचार'' के रूप में अपराध की श्रेणी में आता था वह 'अपराध नहीं है' की श्रेणी में आने वाला व्यवहार हो गया।

साहित्य सर्वेक्षणः– सूर्य कामवासना का केंद्र होता है कामवासना के प्रति तरुणायी की आषक्ति उनकी अज्ञानता का परिणाम है साथ ही उन्हें भ्रमित करने वाली षिक्षा एवं पथभ्रष्ट करने वाले संसाधन, साहित्य, निवर्तमान फिल्म–उद्योग, टी.व्ही. चेनल, प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रानिक मीडिया, या फिर एन्ड्रायड मोबाइल्स में इन्टरनेट एवं गूगल आदि के माध्यम से परोसी गयी कामोत्तेजक जानकारी युवा वर्ग को गर्त में ढ़केल रही है। इस संदर्भ में विविध साहित्य का अवलोकन भी आवष्यक है।

विष्व प्रसिद्ध दर्षनषास्त्री आचार्य रजनीष ''ओषो'' ने कामवासना का केंद्र सूर्य को माना है। पतंजली कहते हैं, ''भुवन ज्ञानम् सूर्ये संयमात।'' अर्थात् सूर्य पर संयम सम्पन्न करने से सौर ज्ञान की उपलब्धि होती है तो उनका संकेत उस सूर्य की ओर नहीं जो आकाष मण्डल का तारा है। अपितु उस सूर्य से है जो हमारे शरीर के भीतर है। ज्योतिषषास्त्र में जैसा सूर्य एवं चन्द्र आकाषीय तारामण्डल में है वही हमारे शरीर में भी उपस्थित हैं।[2]

हमारे भीतर सूर्य कहां है? सौरतंत्र प्रजनन तंत्र की गहनता में है और यही कारण है कि कामवासना में ऊष्णता पायी जाती है जिससे व्यक्ति उत्तेजित होता है। व्यक्ति के भीतर की सूर्य ऊर्जा का केन्द्र काम ही है। उस सूर्य ऊर्जा पर संयम केंद्रित करने से व्यक्ति स्वयं के भीतर के सम्पूर्ण सौर तंत्र अर्थात् काम पर विजय प्राप्त कर सकता है। हाँ यह भी सत्य है कि जैसे सूर्य जीवन है, वैसे ही कामवासना भी है। इस पृथ्वी पर जीवन सूर्य से ही है, और जीवन काम वासना पर ही निर्भर करता है। इसलिये सभी प्रकार के

जीवन का जन्म काम से ही होता है। पतंजलि : योग–सूत्र भाग चार सौजन्य ओषो इंटरनेषनल फाऊंडेषन ।

आधुनिक भौतिकवादी समाज में चिकित्सकों और वैज्ञानिकों का विचार है कि शुक्र रक्षा या ब्रह्मचर्य का पालन करना शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है, अज्ञानता है, धार्मिक अंधविष्वास है, पिछड़ेपन की बात है। अंतराष्ट्रीय स्तर पर व्यापारिक स्वार्थों की पूर्ति हेतु कुछ तथा कथित यौन रोग विषेषज्ञों ने ऐसा ही दुष्प्रचार किया है। वीर्य रक्षाया ब्रह्मचर्य से मानषिक तनाव, अनेक मानसिक रोग, शारीरिक रोग होते हैं, यह झूठ समूचे संसार में फैलाया गया। चिकित्सक और मनोवैज्ञानिक युवाओं को सलाह देते हैं कि कामवासना से उत्पन्न मानसिक व शारीरिक रोगों से बचना है तो वीर्य स्खलन करो। चाहे वैष्यालय जाओ। यहां तक कहा जाता है कि वैष्याओं से मिलने वाले यौन रोग उन रोगों से कम खतरनाक हैं जो कामवासना को संतुष्ट न करने से पैदा होते हैं। करोड़ो युवा ऐसी सलाह मानकर अपना जीवन अंधकारमय बना रहे हैं।[3]

वासना का व्यापार और बाजार अरबों–खरबों रुपया का है। विष्व स्तर के वासना बाजार के व्यापारियों ने ब्रह्मचर्य तथा वीर्य रक्षा के विचारों को बद्नाम करके अपने रास्ते की रूकावटों को दूर कर लिया है जिसके पक्ष में एक भी वैज्ञानिक प्रमाण उपलब्ध नहीं है। ऐसी सोच को हमारा मीडिया या बौद्धिक वर्ग उजागर भी नहीं करता जिससे एक कड़ा असत्य, सत्य बनकर अनगिनत लोगों के जीवन को खोखला, दुःखी और रोगग्रस्त बना रहा है। समाज में तेजी से बढ़ रहे व्याभिचार का एक बड़ा कारण यह भी है।

ब्रह्मचर्य और शुक्र रक्षा के प्रभावों पर विष्वस्तर के अनेक शोध चिकित्सा–विज्ञान जगत में हो चुके हैं। आष्चर्य की बात यह है कि इतना होने पर भी वे शोध मीडिया के माध्यम से कभी सामने नहीं आये। विष्व स्वास्थ संगठन जैसी सक्षम एजेन्सियां एड्स के नाम पर काम वासना के प्रचार को बढ़ावा देने पर अटूट धन खर्च कर रही हैं। परन्तु स्वास्थ्य रक्षा के स्वर्णिम सूत्र 'बह्मचर्य' के वैज्ञानिक रूप से बार–बार प्रमाणित ज्ञान को बताने, सिखाने की बात कभी नहीं करते।[4]

हमारे स्नायु कोषों का निर्माण जिन तत्वों से होता है उनमें फास्फोरस, लेसिथिन, कोलेस्ट्रॉल आदि महत्वपूर्ण हैं। अंतःस्त्रावी ग्रंथियों से निकले हार्मोंन स्वास्थ्य रक्षा में महत्वपूर्ण योगदान करते हैं। वीर्य रक्षा का सीधा अर्थ है सेक्स हार्मोन की रक्षा करना। और वीर्य नाष का अर्थ है हार्मोंन, बल तथा जीवनी शक्ति का विनाष। इन हार्मोन्स की कमी से बुढ़ापा, मानसिक बीमारियां आती हैं और संरक्षण से उत्साह शक्ति, स्वास्थ्य, प्रसन्नता, मानसिक क्षमता बहुत समय तक बनी रहती है। अतः रक्त में हार्मोन्स की उपस्थिती जरूरी है। वीर्य, क्षारीय तथा चिपचिपा एल्बुमिन तरल है। इसमें उत्तम प्रकार का पर्याप्त कैल्सियम, एलबूमिन, आयरन, विटामिन ई, न्युक्लियो प्रोटीन आदि होते हैं। वीर्य स्खलन में एक बार में लगभग बाईस करोड़ (22,00,00000) से अधिक स्पर्मेटोजोआ निकल जाते हैं। अनुमान है कि 1.8 ली. रक्त से 30 मि.ली.

वीर्य बनता है। अर्थात् एक बार के वीर्य स्त्राव से 600 मि.ली. के बराबर रक्त की हानि होती है। डॉ. फ्रेडरिक के अनुसार वीर्य में शक्ति होती है, पूर्वजों का यह विष्वास सही है।

वीर्य के तत्वों के विष्लेषण और शरीर व बुद्धि पर होने वाले लाभदायक प्रभावों पर प्रो. ब्राऊन सिकवार्ड तथा प्रो. स्टीनेच ने बहुत काम किया है। उनके अनुसार अंडकोष नाड़ी को बांधकर वीर्य बाहर जाने के रास्ते को रोककर वीर्य रक्षा के स्वास्थ्य वर्धक प्रभावों पर उन्होंने अध्ययन किया। इनके अलावा विष्व के अनेक चिकित्सा विज्ञानियों ने इस विषय पर शोध किये हैं। शरीरविज्ञान, मूत्र रोग विषेषज्ञ, यौन रोग व प्रजनन अंगों के विद्धान, मनोवैज्ञानिक, स्त्रीरोग विषेषज्ञ, एण्डोक्राईनोलोजी के विषेषज्ञों ने वीर्य रक्षा के महत्व को स्वीकार किया है। वल्मी, मार्षल क्रेपेलिन आदि अनेक प्रसिद्ध चिकित्सा विज्ञानी इस पर सहमत हैं।

मानसिक अवसाद जैसे रोग, विवाहितों की तुलना में आविवाहितों में अधिक हैं। कारण यह कि न्यूरैस्थीमिया जैसे मानसिक व शारीरकि रोगों को अप्राकृतिक क्रियाओं से अपने शुक्र/वीर्य को बाहर निकालकर आमंत्रण दे रहे हैं।

लोवेनफील्ड नाम के गायनाकोलाजिस्ट के अनुसार आजीवन वीर्य रक्षा करने पर कोई बुरे प्रभावों की आषंका नहीं है। इल्लीनोस विष्वविद्यालय के प्रो. एफ.जी. लीडस्टोन एंडोक्राइन तथा रति विषेषज्ञ हैं, का कहना है कि वीर्य रक्षा किसी प्रकार भी हानिकारक नहीं हो सकती आपितु यह परम बल, बौद्धिक क्षमता बढ़ाने वाला है।

रूगल्ज का मत है कि पूर्ण ब्रह्मचर्य पूर्ण स्वास्थ्य का साधन है। डॉ पेरिएट का कहना है कि पूर्ण ब्रह्मचर्य पालन से हानि होने की बात निराधार व काल्पनिक है। चैसाईग्नेक (Chassignac) के अनुसार जो मानसिक रूप से विकारग्रस्त और रोगी हैं, ब्रह्मचर्य का पालन करना उनको कठिन लगता है। रॉयल कालेज लंदन के प्रो. बीले (Beale) का कहना है कि काम संयम से हानि होने की जानकारी आज तक किसी अध्ययन में नहीं मिली। एक विद्धान चिकित्सक मार्षल ने अपनी पुस्तक 'Introduction to the physiology' में लिखा है कि प्रजनन अंगों के संयम से काम शक्ति की सुरक्षा द्वारा अनेक व्यक्ति महान बने और उपलब्धियां प्राप्त की।[5]

भारत में एक पुरातन परम्परा के अंतर्गत खेती के उपयोग हेतु **''बैल बनाने की प्रक्रिया जिसे बदनी''**कहा जाता है जिसमें उस पशु की वीर्य स्खलन वाली नश को बंद कर दिया जाता है। जिससे उसकी क्षमताएँ एवं शक्ति हजार गुना बढ़ जाती हैं। जो खेती के कार्यो में उपयोगी सिद्ध होती है।

सन् 1906 में American Medical Association ने सर्व सम्मति से प्रस्ताव पास किया कि संयम करना स्वास्थ्य के लिये बुरा नहीं है। अमेरिकी समाज की दुर्दषा और विचित्र स्थिति का अनुमान इस तथ्य से

ही लगता है कि वहां के समाचार पत्रों में वैश्याओं के विज्ञापन, उनके शरीर के माप आदि अधिक होते हैं। लिंग, स्तनों, का आकार बढ़ाने, संतति निरोध के अष्लील विज्ञापन अखबारों, पत्रिकाओं व इलैक्ट्रॉनिक मीडिया में देखे जा सकते हैं। इसी मात्रा में बलात्कार, व्याभिचार, शारीरिक या मानसिक रोगी, चरित्रहीनता भी बढ़ रही है।[6]

भारत में भी हमारा समाज इसी दिषा की ओर अग्रसर हो रहा है। हमारे कर्णाधार भारत की राजनैतिक, सामाजिक व सांस्कृतिक दिषा क्या व कैसी हो यह नहीं समझ पा रहे हैं। इसी वजह से हमारा युवा अपनी सुसंस्कृति त्याग कर विदेषी विक्रतियों का षिकार हो रहे हैं।

हैवलॉक ऐलिस ने "Study In The Physiology of Sex" में डॉ. F.B. Fredricको उद्धृत कर कहा हैं कि ''घोड़ा पहली बार समागम करता है तो मृत जैसे बेहोष होकर गिर पड़ता है।[7]

अपराध, व्याभिचार, नषा, अत्याचार, असुरक्षा, भय, आतंक, निर्धनता, अमानवीय व्यवस्थाएं एवं शोषण आदि सभी का मूल कारण यह भोगोन्माद और कामोन्माद ही है। आजीवन संयम का पालन करने वाले हमारे महर्षियों के साथ ही साथ वर्तमान के अनेक आदर्ष उदाहरण हैं– आचार्य बिनोवा भावे, स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानंद, महर्षि अरविंद अनेको आदर्ष हैं जिन्होंन संयम एवं ब्रह्मचर्य व्रत का पालन कर स्वयं और दूसरों को श्रेष्ठ जीवन दर्षन दिया।

मूल अध्ययन–

मानवीय सभ्यता का इतिहास इस दिषा की ओर इंगित करता है कि शैक्षणिक, सामाजिक, तकनीक या बौद्धिक स्तर पर मनुष्य कितनी भी उत्तरोत्तर उन्नति क्यों ना कर ले, प्राकृतिक स्तर पर उसकी मूलभूत आवष्यकताएँ आज भी वैसी ही हैं जैसी पृथ्वी पर उसके विकास के प्रारम्भिक काल में थीं। काम आपूर्ति इनमें से एक है। वर्तमान में जिस तरह इंटरनेट के माध्यम से पोर्न वेव साइड्स के द्वारा मोबाइल्स पर अष्लील वीडियो, अष्लील छवियां, अष्लील कहानियाँ, अष्लील गीत–संगीत, अष्लील चुटकुले आदि सामग्री उपलब्ध करायी गयी है इससे किषोर और युवा वर्ग के बच्चे अपनी अपरिपक्व आयु में ही दिग्भ्रमित हो रहे हैं। जो उम्र उनके व्यक्तित्व के समुचित विकास की है जिससे वे स्वयं का, अपने परिवार का, समूह का, समुदाय का, संपूर्ण समाज का और वैष्विक स्तर पर सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण हेतु ''सज्ज'' करता है उस उम्र में उसका ध्यान भटक कर केवल और केवल कामुकता पर केंद्रित हो जाता है। व्यक्ति अप्राकृतिक, अनैतिक, अपरम्परागत, असंवैधानिक, असमाजिक एवं अमानवीय संसाधनों का प्रयोग कर काम वासना की आपूर्ति करता है। जो उसे विचलित व्यवहारी और कामुक अपराधी बनाती है। यहाँ कामुक अपराधी पर भी दृष्टिपात किया जा सकता है।

कामुक अपराधी कौन है–

"A Sex Offender (Sexual offender sex abuser or sexual abuser) is a person who has committed a sex crime"

-एक यौन अपराधी (यौन अपराधी, यौन दुर्व्यवहार या यौन दुर्व्यवहारी) एक ऐसा व्यक्ति है जिसने यौन अपराध किया है। यह कई तरह से हो सकते हैं। बलात्कार, यौन उत्पीड़न, संबिधिक बलात्कार, पाषविकता, बाल यौन शोषण, महिला जननांग विईतीकरण, Female Genital multination, अनाचार, यौन अधिरोपण आदि। एक कामुक अपराधी इस तरह के कृत्य कारित करता है। दूषित मनोवृत्ति वाले यौन अपराधियों की सांधातिकता के संदर्भ में डॉ. पी. के. सेन कहते हैं कि ''ऐसे व्यक्यिों का केवल अस्तित्व ही समाज के लिए भय और आतंक का कारण बना रहता है। फिर चाहे वे कोई दुष्कृत्य करें या न करें। ये अपराधी कभी भी अपराध कर सकते हैं और इस समाज के लिए खतरा उत्पन्न कर सकते हैं। अतः समाज में इनकी केवल उपस्थिति ही लोगों के लिए भय और चिंता का विषय बनी रहती है।''[8]

जैविक आधार पर यह साबित हो चुका है कि यौन आकर्षण मानव स्वभाव का एक नैसर्गिक लक्षण है। युवावस्था के साथ ही इनमें आवयविक परिवर्तन होने लगते हैं और एक दूसरे के प्रति उनका आकर्षण बढ़ता है और काम वासना जागृत होती है। जिसकी संतुष्टि के लिए सामाजिक व्यवस्था ''विवाह'' के रूप में है परन्तु कामतुष्टि वैधानिक सीमाओं के भीतर न होने पर व्यक्ति यौन अपराध की ओर प्रवृत हो सकता है। संचार तकनीकी के चलते युवाओं को उपलब्ध अष्लील संसाधनों के कारण कामुकता की संतुष्टि हेतु असंवैधानिक तथा असामाजिक कृत्यों की दर बढ़ रही है जिससे गर्भपात, अपहरण, बालात्कार, शीलहरण, सगोत्रीय व्याधिचार, अष्लीलता आदि की घटनाएँ बढ़ रही हैं।

डॉ. परिपूर्णानंद ने कहा है कि कभी–कभी बच्चे या किषोर वयस्क ऐसे दुर्जनों के सम्पर्क में आकर अनैतिक यौन आचरण में पड़ जाते हैं क्योंकि वे यह समझने की क्षमता नहीं रखते कि जो कुछ वे कर रहे हैं वह दुष्कर्म और अपराध है। आगे चलकर ये ही बालक आदतन लैंगिक अपराधी बन जाते हैं।[10]

यौन अपचारिता के कारण–

- औद्योगिकीकरण एवं आधुनिकीकरण के कारण महिलाओं का गृहणी से सहचारिणी बनकर परिवार से बाहर होना और वैवाहिक जीवन की अखण्डता लुप्त होना तथा अन्य पुरूषों के साथ सेवा कार्य करना घनिष्टता में परिणित होकर यौन अपराधों के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करता है।
- धार्मिक मूल्यों के ह्रास से सामाजिक नियंत्रण समाप्त होकर पाश्चात्य प्रभाव से विलासिता की प्रवृत्ति का बढ़ना, परम्परागत मूल्यों और मानदण्डों का महत्वहीन होना लैंगिक स्वच्छन्दता का कारण है।

- नौकरी पेशा अविभावकों का लम्बे समय तक घर से बाहर कामकाज में व्यस्त रहना और इससे उनकी उपेक्षा होना तथा उन पर आवश्यक नियंत्रण न हो पाना, बच्चों में कुसंगति, उदण्डता या आवारागर्दी की संभ्भावनाएँ बढ़ा देता है, जिसमें यौन अपचारिता भी शामिल है। माता–पिता की अनुपस्थिति किशोर–किशोरियों को एकान्त का पर्याप्त अवसर प्रदान करती है जो लैंगिक अपराध के लिये अनुकूल वातावरण बनाते हैं।[11]
- यौन अपराधों के संदर्भ में ''डोनाल्ड टेप्ट'' ने कहा है कि किसी देश के लोगों की रहन–सहन, वेशभूषा, कामोत्तेजक साहित्य, कला, विज्ञापन, चलचित्र आदि का यौन अपराधों का गहरा प्रभाव पड़ता है।

भारतीय दण्ड संहिता में यौन अपराध एवं यौन उत्पीड़न–

भारतीय दण्ड संहिता की धारा 375 से 397 तक विभिन्न प्रकार से यौन अपराधों के संदर्भ में व्याख्या की गयी है। कामुकता के वर्तमान संसाधनों के प्रयोग व्यक्ति को बलात्कार जैसे जघन्य अपराध की ओर प्रेरित करते हैं। अश्लील संसाधनों के कारण व्यक्ति की कामुकता का आवेग उस चरम तक पहुंच जाता है जहां उसे बालात्कार जैसे जघन्य अपराध के तत्व जिनमें स्त्री की इच्छा, स्त्री की सम्मति, स्त्री को भय के द्वारा सम्मति, स्वयं को पति बताकर, 16 वर्ष से कम आयु होना, या सम्मति मन की विकृतता मत्तता के कारण आदि की परवाह नहीं होती और वह उस यौन अपराध को अंजाम दे देता है।[12]

मा. द. संहिता की धारा 377 में अप्राकृतिक अपराध की व्याख्या है। जो व्यक्ति की कामुकता की पराकाष्ठा को पार कर जाता है और इसके मूल में वही कामुकता के लिये वर्तमान संसाधन ही उत्प्रेरक का कार्य करते हैं। पशुओं के साथ काम तुष्टि, पुरुष का पुरुष के साथ या स्त्री का स्त्री के साथ कामुक संसर्ग होना ऐसे उदाहरण हैं। समलैंगिकता अब अपराध नहीं है किंतु भारतीय समाज में ऐसी सोच का स्थान भी नहीं होना चाहिए।

कामुकता के वर्तमान संसाधन–

इंसान अपनी काम तुष्टि हेतु अनेकानेक संसाधनों का प्रयोग करता रहता है वर्तमान में इनफार्मेशन टेकनोलॉजी के चलते इंटरनेट के माध्यम से एंड्रोयड/स्मार्ट फोन द्वारा सर्वाधिक प्रयोग हो रहा है। सैंकड़ो–हजारों साइड्स ऐसी हैं जहाँ अश्लीलता एवं कामुकता से संदर्भित वीडियोज, चित्र, स्टोरीज, चुटकुले, कार्टून, विज्ञापन आदि प्रचुर मात्रा में भरे पड़े हैं। कोई भी व्यक्ति किसी भी समय किसी भी स्थान पर 'पोर्न साइड्स' पर जाकर मनचाहा देख–सुन कर अपनी कामवासना की तुष्टि करते रहते हैं। यहाँ महत्वपूर्ण यह है कि ऐसी चीजों का आदी होने पर व्यक्ति समाज में महिलाओं के साथ छेड़छाड़, भद्दे

कमेन्ट्स, मोबाइल पर गलत वार्ता व मैसेज भेजना, या फिर बालात्कार जैसे अपराधों कों अंजाम देना शुरू कर देता है। ऐसे ही कुछ महत्वपूर्ण संसाधन निम्नवत हैं–

1. **एन्ड्रायड मोबाइल में इंटरनेट पर उपलब्ध**
2. **NETFLLX TV**
3. **Web Series**

पोर्न साइड्स अश्लील चित्र एवं वीडियो, अश्लील जोक्स एवं गाने, अश्लील स्टोरीज एवं वार्तालाप, अश्लील कार्टून एवं लेख, देह व्यापार के विज्ञान, सेक्स बढ़ाने हेतु दवाओं के विज्ञापन, सेक्स टाइम बढ़ाने के कारगर उपाय, सेक्स टाइम बढ़ाने के प्राकृतिक तरीके, पौरुष शक्ति बढ़ाने के उपाय, स्तम्मन शक्ति बढ़ाने के उपाय, काम शक्ति बढ़ाने के अचूक नुस्खे, यौन शक्ति और योगा, यौन शक्तिवर्धक दवाएँ, यौन शक्ति बढ़ाने के आयुर्वेदिक उपाय, यौन शक्ति बढ़ाने के तरीके और आहार, मर्दानिगी की रामवांण दवाएँ एवं घरेलु नुस्खे।

NETFLLX TV तथा **Web Series** के माध्यम से कामुकता को कुछ इस तरह परोसा जा रहा है। जो हमारी कल्पना से परे है और जिसे मैं शब्दों में व्यक्त करना नहीं चाहता। था उपरोक्त अनेकानेक कामुक सामग्री हमारे समाज में उपरोक्त संसाधनों के माध्यम से परोसी जा रही है। जहाँ आवश्यकता है तब तक उचित है किंतु कम आयु के बच्चे भी नैसर्गिक आवश्यकता को कंट्रोल करने की अपेक्षा ऐसी सामग्री से अपनी कामुकता की तुष्टि करने लगे है,यह कृत्य सामाजिक, धार्मिक, कानूनी या सांस्कृतिक परिवेश को क्षति पहुँचा रहा है। ऐसे बच्चे और युवा भारतीय परम्पराओं, मान्यताओं, रीति–रिवाजों, सांस्कृतिक मूल्यों को आघात पहुँचा रहे हैं जिससे हमारे समाज का तानाबाना या संगठन पूरे समाज को विघटन की ओर ले जा रहा है जो कामुक आपराधिक घटनाओं की प्रकृति को जघन्य एवं दर को बढ़ा रहा है। निःसन्देह प्राचीन भारत में 'कामसूत्र' जैसे शास्त्रों की रचना हुई या फिर खजुराहो के मंदिरों में काम से संबंधित मूर्तियों का निर्माण हुआ पर वहां तक एक विज्ञान, एक मर्यादा स्थापित रही जो कामुकता को एक दिशा देने में सक्षम थी किंतु वर्तमान कामुकता ये संसाधन ऐसे हैं जो आम व्यक्ति को विपथगामी बना रहे हैं।

अध्ययन के उद्देश्य–प्रस्तुत शोधपत्र में अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य निरूपित किये गये हैं–

- कामुकता के वर्तमान संसाधनों के समाज में युवाओं पर पड़ रहे प्रतिकूल प्रभावों को परिलक्षित करना।
- स्वास्थ्य, चरित्र एवं भारतीय संस्कृति के प्रति आम जनमानस को जागरूक करना।
- पश्चात्य संस्कृति के दुष्परिणामों से भारतियों को अवगत करवाना।

उपकल्पना–प्रस्तुत शोध पत्र में अध्ययन हेतु निम्नलिखित उपकल्पनाओं को आधार बनाया गया है–

- कामुकता के वर्तमान संसाधन, युवाओं को आपराधिकता की ओर ढ़केल रहे हैं।

- आधुनिकता के नाम पर कामुकता के वर्तमान संसाधनों के कारण भारतीय संस्कृति का क्षय हो रहा है।

शोध का अध्ययन क्षेत्र–डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय सागर म.प्र. में समस्त विभागों को शोध अध्ययन के क्षेत्र के रूप में निरूपिता किया गया है। विश्वविद्यालय में कुल 10 स्कूल में 34 विभागों में अध्ययनरत छात्र–छात्राएँ एवं शोध छात्रों को जो विश्वविद्यालय परिसर में हैं उस सम्पूर्ण परिक्षेत्र को शोध का अध्ययन क्षेत्र निर्धारित किया गया है।

निदर्श–डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय सागर म.प्र. के कुल 10 स्कूलों में 34 विभागों में अध्ययनरत 2300 छात्र–छात्राओं एवं शोध छात्रों में से प्रत्येक विभाग से 10 विद्यार्थी जिनमें स्नातक, स्नातकोत्तर व शोध छात्र शामिल हैं को निदर्श के रूप में शामिल किया गया है। इस प्रकार 340 ऐसे छात्र–छात्राओं को निदर्श के रूप में सम्मिलित किया गया है जो एड्राइड मोबाइल का संचालन करते हैं। प्रत्येक विभाग से स्नातक स्तर पर 6 स्नातकोत्तर स्तर पर 2 तथा पीएच.डी. स्तर पर 2 छात्रों का चयन किया गया है।

तथ्य संकलन की प्रविधि–डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय सागर म.प्र. के कुल 10 अध्ययन स्कूलों में 34 विभागों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं में से जिन 340 छात्र–छात्राओं को निदर्श के रूप में निर्दिष्ट किया है उनमें प्रत्येक छात्र–छात्राओं से प्रश्नावली के माध्यम से विषयवस्तु के संदर्भ में 10 प्रश्न पूंछे गये हैं हालांकि शोधकर्त्ता टीम ने पहले साक्षात्कार के माध्यम से विषय से संबंधित जानकारी चाही थी किंतु छात्र–छात्राओं ने बदनामी के कारण सहयोग नहीं किया तथापि नाम एवं परिचय की गोपनीयता की शर्त पर प्रश्नावली में केवल 10 प्रश्नों के उत्तर देने पर सहमति हुई और शोधकर्त्ता इस शोध पत्र को अंतिम स्वरूप दे सके।

कामुकता के संदर्भ में वर्तमान संसाधनों के प्रयोग पर युवाओं की प्रतिक्रिया

क्र.	कामुकता के वर्तमान संसाधनो के प्रयोग पर युवाओं से प्रश्न	उत्तर दाता								
		प्रतिक्रिया	आवृत्ति	%	प्रतिक्रिया	आवृत्ति	%	प्रतिक्रिया	आवृत्ति	%
1.	आप एण्ड्रायड फोन/इन्टरनेट का प्रयोग करते हैं	शैक्षणिक गतिविधि में	340	100	खेल, मनोरंजन एवं समाचार में	306	90.00	कामुकता तुष्टि हेतु	298	87.64
2.	काम तुष्टि के लिये प्रयोग करते हैं	अश्लील कहानियां	96	32.21	अश्लील चित्र एवं वीडियो	256	85.90	अश्लील जोक्स एवं लेख	209	70.13
3.	अश्लील चित्र व वीडियो आप देखते हैं	अकेले होने पर	256	85.90	मित्रों के साथ	26	8.72	अविभावकों की उपस्थिति में	06	2.01
4.	कामुकता से संबंधित बातों पर खर्च समय	लगभग 1 घण्टा	236	79.19	1 से 2 घण्टा	42	14.09	2 घण्टे से अधिक	20	6.71
5.	कामुकता से संबंधित चित्र व वीडियो देखने पर	आनंदानुभूति होती है	198	66.44	विचलित होते हैं	122	40.93	ग्लानी होती है	183	61.40
6.	पोर्न साइड देखने पर प्रतिक्रिया	सेक्स करने की उत्कंठा	242	81.20	देखकर डर जाते हैं	182	61.07	आनंद की पराकाष्ठा होती है	192	64.43
7.	पोर्न साइड देखने पर आपकी क्रिया	अप्राकृतिक तरीकों का प्रयोग	173	58.05	बच्चों से अप्राकृतिक मैथुन	46	15.43	कोई आपराधिक व्यवहार	09	3.02
8.	ऐसे कृत्य करने पर आप	स्वयंजलील हुए	169	56.71	अन्य द्वारा जलील किये गये	46	15.43	अंतरात्मा ने कचोटा	89	29.86
9.	ऐसे कृत्यों के उपरान्त मन की भावना	प्रायश्चित करना	106	35.75	पुनः आकर्षित होना	196	65.77	ईश्वर आराधना करना	56	18.79
10.	ऐसे कृत्यों के प्रति अन्य को संदेश	सामाजिक बुराई है	231	77.51	शरीर को हानिकारक है	262	87.91	अपराध की ओर अग्रसर	77	25.83

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 7, July 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gage as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अध्ययन विश्लेषण– ''कामुकता के वर्तमान संसाधन एवं युवा वर्ग पर इसके दुष्प्रभाव के रूप में कामुक अपराध'' एक महत्वपूर्ण शोध विषय है। व्यक्ति आपनी बुराईयों को साधारणतः उजागर नहीं करता परन्तु उसे स्वयं इस बात का अहसास होता है कि उसके द्वारा किया गया कृत्य विचलित व्यवहार या अपराध है जिसे असामाजिक व्यवहार की संज्ञा दी जाती है। अध्ययन विश्लेषण में सारणी में कुल 10 प्रश्न रखे गये हैं। जिसे डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय के 10 स्कूलों के 34 विभागों में स्नातक, स्नातकोत्तर तथा पीएच.डी. में अध्ययनरत 340 छात्र–छात्राओं के रूप में निर्दिष्ट निदर्श के रूप में उनकी प्रतिक्रिया के रूप में जबाव लिये गये हैं जिसे हम सारणी एवं विश्लेषण के द्वारा प्रस्तुत कर रहे हैं। विद्यार्थियों से जब पूछा गया कि आप एण्ड्रायड फोन प्रयोग करते हैं तो ज्ञात हुआ कि 340 में से सभी 340 विद्यार्थी अर्थात् 100 प्रतिशत शैक्षणिक गतिविधियों में इसका प्रयोग करते हैं। यह एक शुभ संकेत है कि विद्यार्थी अपने शैक्षणिक स्तर में गम्भीरता के साथ सुधार कर रहे हैं। वहीं खेल, मनोरंजन एवं समाचारों के लिये 306 विद्यार्थी अर्थात् 90 प्रतिशत ऐसे विद्यार्थी हैं जो अपने एण्ड्रायड फोन का प्रयोग सूचना के लिये करते हैं। यह भी सामाजिक उत्थान में एक विशिष्ट दिशा को तय करता है। किंतु 298 विद्यार्थी ऐसे है जो उरोक्त दोनों के साथ ही साथ कामुकता की तुष्टि हेतु सूचना के ऐसे वर्तमान संसाधनों का प्रयोग करते हैं। यह कुल संख्या का 87.64 प्रतिशत है। यह अच्छा संकेत नहीं है। विद्यार्थी अपने अध्ययन काल में कामुकता को बढ़ावा देने वाले, चित्र,वीडियो, लेख आदि पर ध्यान देंगे तो उनके अध्ययन के मूल उद्देश्य के पथ से विचलित हो सकते हैं। यह सामाजिक एवं कानूनी दोनों स्तर पर गम्भीरतम समस्याओं को जन्म दे सकने वाली स्थिति है।

शोध कार्य की विषय वस्तु पर जब गहराई से प्रश्न पूछे गये तब कुल 298 विद्यार्थियों अर्थात् 87.64 प्रतिशत विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न कामोत्तेजक माध्यमों पर जो प्रतिक्रिया मिली वह बहुत निराशा जनक है समाज के उज्जवल भविष्य के लिये। 96 विद्यार्थी अर्थात् 32.21 प्रतिशत ऐसे हैं जो काम उत्तेजना के आनंद के लिये इन वर्तमान संसाधनों का इस्तेमाल करते हैं। कुल 298 विद्यार्थियों का एक बहुत बड़ा भाग 256 विद्यार्थी जो 85.90 प्रतिशत है, अश्लील चित्रों और अश्लील वीडियों के माध्यम से अपनी कामोत्तेजना बढ़ाते हैं और उसकी तुष्टि करते हैं। निःसंदेह यहां यह स्पष्ट किया जा सकता है कि हमारे समाज का युवा वर्ग एक ऐसे विघटित समाज को जन्म देने जा रहा है जिसकी खाई को पाटना लगभग असंभव प्रतीत होता है। वहीं 298 में से 209 युवा जो कुल संख्या का 70.13 प्रतिशत भाग है जो अश्लील जोक्स एवं अश्लील लेखों के माध्यम से भी अपनी कामवृत्ति को शांत करने का प्रयत्न करते हैं। यह भारतीय समाज के लिये अच्छा चित्र प्रस्तुत नहीं हो रहा है।

युवा वर्ग की मानसिक सोच आज भी सामाजिक है। रीति–रिवाज, परम्पराओं आदि में वे पूरा विश्वास रखते हैं यह इस प्रश्न के पूछे जाने पर परिलक्षित होता है। अश्लील चित्र व वीडियों अधिकांशतः युवा कुल संख्या 298 का एक बहुत बड़ा भाग अर्थात् 256 युवा जो 85.90 प्रतिशत है ऐसे चित्र या वीडिया को अकेले होने पर ही देखते हैं। मित्रों के साथ ऐसी कामोत्तेजक चित्र या वीडियो देखने वाले युवाओं की संख्या मात्र 26 है जो कुल संख्या का 8.72 प्रतिशत है तथा अविभावकों की उपस्थिति में भी ऐसे कामोत्तेजक चित्र या वीडियों देखने वाले युवाओं की संख्या 6 है। जो कुल संख्या का मात्र 2.01 प्रतिशत है। फिर भी चिंताजनक है। क्योंकि हम जिस भारतीय समाज में रहते हैं वहां ऐसी कामुक बातों का कोई स्थान ही नहीं होता। फिर भी कुछ परिवार हमारे देश में ऐसे हैं जो Sex Educationके नाम पर अपने बच्चों पर प्रतिबंध नहीं लगाते।

कुल संख्या का एक बड़ा भाग अर्थात् 236 युवा ऐसे हैं जो कामुकता से संबंधित बातों पर प्रतिदिन लगभग 1 घण्टे का समय खर्च करते हैं जो 79.19 प्रतिशत युवा वर्ग है। यह एक ऐसा तथ्य है जो युवाओं को विचलित होने से बचा रहा है। क्योंकि 42 युवा अर्थात् 14.09 प्रतिशत बच्चे 1 से 2 घण्टे तथा 20 युवा अर्थात् 6.71 प्रतिशत छात्र–छात्राएं 2 से अधिक घण्टा ऐसी कामोत्तेजक बातों में अपना समय खर्च करते हैं। कहने का तात्पर्य यह कि अभी इस बात की गुंजाइश है कि युवाओं की सोच को परिवर्तित कर एक सकारात्मक भाव पैदा कर उन्हें विचलित और अपराधी होने से बचाया जा सकता है।

कामुकता से संबंधित चित्र व वीडियो देखने पर युवाओं की प्रतिक्रिया में जानकारी मिलती है कि कुल संख्या 66.44 प्रतिशत वर्ग अर्थात् 198 ऐसे तरुण हैं जिनको चित्र व वीडियो देखकर आनंदानुभूति होती है। वहीं 40.93 प्रतिशत अर्थात् 122 युवा ऐसे भी हैं जिन्हें ऐसे चित्र व वीडियो देखकर स्वयं में विचलन महसूस होता है। वे विचलित होकर ऐसे मार्ग पर बढ़ जाते हैं जो उन्हें अपराधिकता की ओर अग्रसर करते हैं। साथ ही 183 बच्चे ऐसे हैं जिन्हें आत्म ग्लानी भी होती है। यह कुल संख्या का 61.40 प्रतिशत ऐसा सकारात्मक तथ्य है जो भारतीय संस्कृति के प्रति इन युवाओं का संस्कार है जो उन्हें विचलन और आपराधिक व्यवहार से बचाये हुए है।

कामुकता के वर्तमान संसाधनों में एण्ड्राइड फोन में इन्टरनेट के माध्यमों से युवाओं से इस संदर्भ में एक विशेष **साइड** के संदर्भ में ''पोर्न साइड''देखने पर जो प्रतिक्रिया मिली वह शोध कार्य की उपकल्पना को बहुत बल देती है। कुल संख्या में 242 युवाओं अर्थात् 81.20 प्रतिशत छात्र–छात्राओं ने स्वीकार किया कि उनके मन में सेक्स करने की प्रबल उत्कष्ठा जन्म लेती है। भारतीय समाज में विवाह पूर्व सेक्स करना सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षय का घोतक है। इनमें ही 182 युवा ऐसे भी है जो इन वीडियोज को देखकर डर जाते हैं। जिनका कुल संख्या में 61.07 है। कारण यह कि जो समाज में प्रतिबंधित है उसे उत्कण्ठा वश

देखते जरूर है पर मन में भय का स्थान बन जाता है। इसी कुल युवा संख्या में 192 ऐसे निदर्श हैं जो सेक्स आनंद की पराष्ठा पर पहुंच जाते हैं जिनका प्रतिशत 64.42 है। यहां स्पष्ट करना चाहता हूँ कि लड़के वीर्य स्खलन तक की दशा को छू लेते हैं । पूर्ववत साहित्य सर्वेक्षण पर गौर करें तो युवाओं द्वारा वीर्य स्खलन शारीरकि, मानसिक कमजोरियों को जन्म देता है। और विचलित व्यवहार तथा अपराध की ओर अग्रसर करता है।

इसी संदर्भ में **''पोर्न साइड''** देखने के उपरान्त क्रिया के संदर्भ में 173 युवाओं अर्थात् 58.5 प्रतिशत युवाओं द्वारा स्वीकार किया गया कि वे सेक्स आपूर्ति के अप्राकृतिक तरीकों का प्रयोग करने लगे। 46 युवाओं ने अर्थात् 15.43 प्रतिशत ने स्वीकार किया कि वे छोटे बच्चों के साथ अप्राकृतिक मैथुन में संलग्न हो गये। यहां तक की कुल संख्या का 3.02 प्रतिशत अर्थात् 9 युवा ऐसे भी मिले जो यह स्वीकारते हैं कि इसके चलते उन्होंने स्वयं को आपराधिक व्यवहार में संलग्न पाया। यह बहुत ही महत्वपूर्ण एवं चिंताजनक विषय है। देश का युवा ऐसे कामोत्तेजक संसाधनों के प्रयोग के चलते किस दिशा में स्वयं को तथा समाज को ले जा रहा है।

जहाँ समाज की चिंता की वजह यह है कि कामोत्तेजना में हमारे समाज के युवा विचलित हो रहे हैं वहीं समाज की संस्कृति, सामाजिक मूल्यों तथा प्रतिमानों को राहत भी है कि कुल संख्या का 56.71 प्रतिशत अर्थात् 169 युवा ऐसे कृत्यों से स्वयं में जलील भी होता है क्योंकि वह इन सब बातों को अच्छा नहीं मानता 46 तरुण ने अर्थात् 15.43 प्रतिशत ने स्वीकार किया कि वे दूसरों के द्वारा जलील किये गये तथा 89 युवा अर्थात् 29.86 प्रतिशत ऐसे भी युवा थे जो स्वीकार करते हैं कि उनकी अंतरात्मा ने उन्हें कचोटा है। स्पष्ट है कि नैसर्गिक आवश्यकता की पूर्ति के समय पूर्व कामुक संसाधनों का उपयोग उनके सामाजिक, सांस्कृतिक मूल्यों से ऊपर नहीं है।

सांस्कृतिक मूल्य, प्रमिमान, संस्कार ऐसी अवधारणा है जो व्यक्ति को गलत और सही का आभास करवाते हैं ऐसे कृत्यों के उपरान्त मन की भावना के संदर्भ में 106 युवाओं का अभिमत है कि वो स्वयं में प्रायश्चित करते हैं कि गलत किया। यह कुल संख्या का 35.75 प्रतिशत है। जो सामाजिक मूल्यों को समझता है। साथ ही 56 छात्र–छात्राएँ अर्थात् 18.79 प्रतिशत ऐसे युवा हैं जो प्रायश्चित के तौर पर ईश्वर की आराधना करते हैं। वहीं 196 युवा अर्थात् 65.77 प्रतिशत एक बड़ा भाग ऐसे ही कामोत्तेजक संसाधनों की ओर पुनः आकर्षित होते हैं यह अच्छा संकेत नहीं है। किसी भी बात की बारम्बारता व्यक्ति को विचलित व्यवहार और अपराध की ओर अग्रसर करने के लिये परिस्थितियाँ निर्मित करती है।

उपरोक्त सभी परिस्थितियों में युवाओं की उहापोह की स्थिति है। ऐसे कृत्यों के संदर्भ में दूसरों को संदेश के संदर्भ में जो प्रतिक्रिया युवाओं से मिली वह निःसंदेह समाज के लिये सकारात्मक है। कुल निदर्श

संख्या से 231 युवा अर्थात् 77.51 प्रतिशत यह स्वीकारते हैं कि यह एक सामाजिक बुराई है इसी संख्या का एक बड़ा भाग 262 युवाओं ने यह भी स्वीकार किया कि यह सब शारीरिक क्षमता के लिये हानी का कारण है। जो कुल संख्या का 87.91 प्रतिशत है। साथ ही 77 ऐसे युवा भी हैं अर्थात् 25.83 प्रतिशत जो स्वीकारते हैं कि ऐसे कामोत्तेजक संसाधनों का प्रयोग व्यक्ति को आपराधिकता की ओर अग्रसर करने में भी भूमिका का निर्वहन करता है।

निष्कर्ष–

नैसर्गिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रत्येक सम्य समाज ने प्रतिमानों का गठन किया है। समाज की संस्कृति और मूल्य विघटन की ओर अग्रसर न हो अतः व्यवहार के प्रत्येक स्वरूप को रीति–रिवाज, परम्पराओं, आचार संहिताओं, प्रतिमानों या फिर कानूनों के माध्यम से समाज के प्रत्येक व्यक्ति को संस्कारित किया जाता है। हमारी शिक्षा पद्धति, हमारी सामाजिक व्यवस्थाएँ, हमारी सामाजिक संरचना सभी कुछ अपने अपने प्रतिमानों से बंधी हुई हैं। कुछ पाश्चात्य विचारधारा के लोगों ने भारतीय संस्कृति पर आघात करने के लिए आजादी के पश्चात षड़यंत्रपूर्वक कभी अंग्रेजी शिक्षा पद्धतियों तो कभी पाश्चात्य संस्कृति को हथियार बनाकर देश के बच्चों और युवाओं पर प्रतिघात किया है। हमारी वैश्विक छवि को नष्ट कर आध्यात्मिक विचारधारा का परित्याग कर भौतिकवादी विचारधारा का आत्मलिंगन करने का प्रयास किया है। जिसके परिणाम स्वरूप हमारा खान–पान, हमारा रहन–सहन, हमारी वेष–भूषा, हमारी संस्कृति, सामाजिक मूल्य, परम्पराओं, रीति–रिवाजों आदि को घनघोर प्रताड़ना दी जा रही है। कभी बेइज्जत कर तो कभी मजाक बनाकर। परिणाम स्वरूप समाज का एक बहुत वर्ग भौतिकवादी विचारधारा में फसकर सामाजिक विघटन की सैकड़ों दिशाओं में अग्रसर हो रहा है। इन्हीं में से एक कामुकता के प्रति युवाओं का लालायित होना है। आज कामुकता के वर्तमान संसाधन एवं युवा वर्ग पर इसके दुष्प्रभाव के रूप में कामुक अपराधों के रूप में समस्याएँ दृष्टिगोचर हो रही हैं। शोध कार्य के निष्कर्ष रूप में मुख्य तौर पर यह बात स्पष्ट होती है कि युवाओं की नैसर्गिक आवश्यकताओं की पूर्ति के सामाजिक प्रतिमानों की शिक्षा या संस्कार नहीं दिये जा रहे। कामुकता की आपूर्ति जिन सामाजिक मान्यताओं या परम्पराओं अथवा प्रतिमानों के अंतर्गत होनी चाहिए एवं जिसकी पूर्ति के लिये निर्धारित संसाधनों का उपभोग करना चाहिए वह शिक्षा या संस्कार युवाओं को नहीं दिये जा रहे। इसी कारण युवाओं का एक बड़ा वर्ग कामुकता की तुष्टि हेतु कामुकता के वर्तमान संसाधनों में इंटरनेट, NETFLLX TV या WEB SERIES का अधिकारिधक प्रयोग कर अपनी काम वासना की तुष्टि कर रहे हैं और विचलित व्यवहार तथा अपराध की ओर बढ़ रहे हैं।

सुझाव– युवाओं को कामुकता के पाश जाल से मुक्त करने के लिये निम्न दृष्टिकोण पर ध्यान देना चाहिए।

- समय–समय पर युवाओं को विभिन्न माध्यमों से ऐसे कृत्यों के दुष्परिणामों से अवगत करवाना चाहिए एवं उन्हें जागरुक करना चाहिए।
- आध्यात्मिक, सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक मान्यताओं को प्रबल बनाने में समाज की विभिन्न संस्थाओं को महत्वपूर्ण भूमिका का निवर्हन करना चाहिए।

संदर्भ

1. Sigmand Freud, Psychoanaliticual theory, https://www.simply psychology.org>sig…….
2. ओशो https://hindi.webdunia.
3. Brahmacharya Benefits/spiritual Benefits fo celibacy, Dada Bhagwan Foundation- https://www.dadabhagwan.org > importance of celibacy.
4. I bid
5. Marshall Hall, Introducation to Physiology, Britaninnica.com https://www Britannica.com>biography
6. I bid
7. Havelock Ellis, Study in the Physilogy of sex, Volume- I www.gutenberg.org>ebooks.
8. P.K. Sen, Penology old and new, 1973, P.124
9. डॉ. ना. वि. परांजये, ''अपराधाशास्त्र दण्ड प्रशासन एवं प्रपीड़नशास्त्र सेंट्रल लॉ पब्लिकेशन,8th edi, 2015, P.180
10. डॉ. परिपूर्णानन्द : क्राइम क्रिमिनल एण्ड कन्विक्ट, 1963, पे. 148
11. I. bid, P. 184
12. डॉ. बसंतीलाल बाबेल, भा. द. सं., सेंट्रल लॉ एजेन्सी, 1977, पेज. 269